PROF. P.J. KURIEN : Why can you not say that you will consider it ?

SHRIMATI RAM DULARI SINHA : You can come to my office.

MR. CHAIRMAN : Are you still pressing for it or are you withdrawing ?

PROF. P.J. KURIEN : I beg to move for leave to withdraw the Bill further to amend the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Union Territories) Order, 1951, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964 and the Constitution (Goa Daman and Diu) Scheduled Castes Orders, 1968.

MR. CHAIRMAN : The question is : "That leave be granted to withdraw the Bill further to amend the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Union Territories) Order, 1951, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962. the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964 and the Constitution (Goa Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968."

The Motion was adopted.

PROF. P.J. KURIEN : I withdraw the Bill.

MR. CHAIRMAN : Now we go to the next item. Shri Rajnath Sonkar Shastri.

16.50 hrs

HINDU SCRIPTURES AND OTHER RELIGIOUS LITERATURE (REVIEW AND AMENDMENT) BILL BY SHRI RAJNATH SONKAR SHASTRI

***श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री** (सैदपुर): सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि हिन्दू धर्म-ग्रंथों तथा अन्य धार्मिक साहित्य में ऐसे शब्दों, वाक्यों, कंडिकाओं, पद्यखंडों, अध्यायों आदि का, जिनसे भारत के संविधान में अन्तर्विष्ट सिद्धांतों और संविधान की प्रस्तावना में अन्तर्विष्ट भारत की जनता के पुनीत संकल्प के विपरीत, धर्म मूलबंश, जाति, लिंग, व्यवसाय या जन्म-स्थान के आधार पर नागरिकों के प्रति घृणा, भेदभाव असमानता या अस्पृश्यता को प्रोत्साहन मिलता है या प्रचार होता है, पता लगाने और उनका लोप करने या उनमें संशोधन करने की दृष्टि से हिन्दू धर्मग्रन्थों तथा अन्य धार्मिक साहित्य का पुनरीक्षण करने और इस प्रयोजन के लिए एक आयोग की स्थापना करने तथा इनसे सम्बन्धित बातों का उपबंध करने हेतु विधेयक पर विचार किया जाये"

पार्लियामेंट के इतिहास का यह 37वां वर्ष है और मैं समझता हूं कि आज यह जो बिल मैं पेश कर रहा हूं, वह हिन्दुस्तान के 70 करोड़ नागरिकों में नई आशा और नई ज्योति लाएगा। मैं आज बहुत ही गौरवान्वित हूं और मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है कि मैं इस बिल को इस सातवीं लोक सभा में पेश कर रहा हूं जब कि चाहिए यह था कि इस बिल को आजादी के बाद जब 26 जनवरी 1950 को यह देश गणराज्य घोषित हुआ उसी समय इस पार्लियामेंट के अंदर लाया जाता। लेकिन खेद है कि हमारे कुछ बुजुर्गों ने पार्लियामेंट के अन्दर इस बिल को लाने का प्रयास किया तो उस परिस्थिति में उस समय यह बिल किसी कारण नहीं आ सका। मैं उपस्थित माननीय सदस्यों से अनुनयपूर्वक निवेदन करूंगा कि वह जरूर इस बिल को इस पहलू से देखें और बड़ी गम्भीरता से इस पर विचार करें। फिर हम लोग इस पर जो आगामी चर्चा करें उस में बिलकुल संविधान के तहत

*Moved with the recommendation of the President.

संविधान की मूल भावना को ध्यान में रख कर खुले दिल से विचार करें। हो सकता है कि यह बिल आगे भविष्य में दो तीन चार दिन के बाद हिन्दुस्तान के अंदर एक विवाद का स्वरूप धारण करे लेकिन मेरी मनोभावना कतई ऐसी नहीं है कि मैं किसी धार्मिक भावना पर चोट पहुंचाऊं या राजनीति में धर्म को घुसाऊं। यह जो हिन्दू धर्म-ग्रन्थ संशोधन विधेयक है इस में बहुत ही अच्छे ढंग से अपने दिमाग को और मन को काबू में कर के हम लोग 17-18 करोड़ की संख्या में जो शेडयूब्ड कास्ट होने के कारण और जो आज 30-35 करोड़ की संख्या में बैकवर्ड क्लास के होने के कारण या अन्य किसी ऐसे ही उपेक्षित नामों के होने के कारण हर प्रकार के अधिकार से वंचित हो कर रह रहे हैं जिन के कोई अधिकार नहीं हैं, जिन के बारे में निरन्तर घृणा और उपेक्षा बरती जा रही है उन की स्थिति के ऊपर विचार करें।

इस बिल को पेश करते समय मैं अपने देश के पवित्र संविधान के उन आर्टिकिल्स की तरफ थोड़ा ध्यान ले जाऊंगा जिन में कहा गया है कि हमारा भारत का संविधान समतावादी है, मानव-वाद की नीव पर पूर्ण तौर से आधारित है, इस की मूल भावना है कि सामाजिक, राजनैतिक न्याय हरएक को प्राप्त हो, विचारों में हर व्यक्ति स्वतंत्र हो, उसको अपने विचारों का अभिव्यक्त करने की पूरी छूट हो, उस को विश्वास सम्बन्धी अवधारणाओं को बनाए रखने के लिए छूट हो, वह किसी भी धर्म को मान सकता है और किसी भी देवी/देवता अथवा धर्म की उपासना स्वतंत्रतापूर्वक कर सकता है। हमारे संविधान में यह निहित है कि अपनी प्रतिष्ठा कमाने और अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए सब को संविधान की ओर से पूरे तौर से अवसर की समानता है और समान रूप से अवसर प्राप्त है। सविधान में व्यक्ति की गरिमा को बनाए रखने की बात भी है और राष्ट्र की एकता को भी बनाए रखने की पूरी कोशिश की गई है। कोई भी क्लाज उस का ऐसा नहीं है जो यह कह रहा हो कि राष्ट्र की एकता पर कोई किसी किस्म की चोट लगे। हमारे राष्ट्र में अखण्डता का वातावरण पैदा हो और यह किसी भी व्यक्ति को अधिकार नहीं है कि वह कोई ऐसी बात करे जिससे कि राष्ट्र के खण्डित होने का कोई स्रोत उत्पन्न हो।

हमारे संविधान मे मानव-वाद का मूल स्वरूप निर्धारित किया गया है। और इन्ही सब परिवेश में धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र की कल्पना की गई है। धर्मनिरपेक्षता के बारे में कोई दो मत नहीं हैं। प्राय: यह सर्वविदित है कि हमारे 70 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में अनेक धर्मों के लोग हैं और सभी को पूरा अधिकार है कि अपने-अपने धर्म का अपने अनुसार पालन करें, अपने अनुसार आचरण करें और उसका प्रसार व प्रचार करें। साथ ही साथ, लोकतंत्रात्मक गणराज्य एक हमारा संकल्प है कि हर व्यक्ति के साथ, चाहे वह किसी कौम का हो, किसी धर्म का हो, किसी जाति का हो, किसी लिंग का हो, वह स्त्री हो पुरुष हो या बच्चा हो, सभी को एक सूत्र में पिरोकर लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाए रखने की व्यवस्था है।

हमारे संविधान में अस्पृश्यता का अन्त करने की बात कही गई है। साथ ही साथ यह भी कहा गया है कि यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के खिलाफ अस्पृश्य आचरण करेगा, तो वह दोषी माना जाएगा, कानून के अन्तर्गत सजा का भागी होगा। विभिन्न क्लाजेज में इस बात की व्याख्या की गई है कि यदि किसी व्यक्ति के साथ अस्पृश्य आचरण किया जाएगा तो उसके लिए इतनी सजा या इतना जुर्माना हो सकेगा। इसी आधार पर हर व्यक्ति को मन्दिर, मस्जिद अथवा अन्य पूजा स्थलों में निर्बाध रूप से भ्रमण करने की इजाजत है। यदि अस्पृश्यता के आधार

पर कोई व्यक्ति किसी को अयोग्य साबित करता है या उसमें कोई कमी बताता है या कुछ ऐसी बातों का जिक्र करता है जिससे उस आदमी में निर्योग्यता स्पष्ट होती है तो वह भी अपराधी माना जाएगा। जैसा कि मैंने पहले कहा है, हर व्यक्ति को अपने धर्म से सम्बन्धित कुछ भी करने का अधिकार है परन्तु उसमें शर्त यही है कि किसी अन्य व्यक्ति की भावनाओं को कोई चोट न पहुंचे। उससे किसी के स्वाभिमान को ठेस न पहुंचे और किसी का उससे अपमान न हो। धर्म के आधार पर किसी के लिए कोई मंदिर वर्जित नहीं है, कोई अन्य स्थान वर्जित नही है। हमारी यह संसद हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा मन्दिर है जिसमें किसी भी जाति और धर्म का कोई भी बन्धन नहीं है। मैं एक हिन्दू हूं और मैं यह भी दावा करता हूं कि मैं एक पक्का हिन्दू हूं लेकिन मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मैं एक हिन्दू हूं। मुझे यह कहते हुए बुरा महसूस हो रहा है कि हमारे संविधान के रहते हुए भी हिन्दू धर्म मे करीब-करीब 40 पुस्तकें हैं जिनमें एक वर्ग विशेष के लिए इतने अपमानजनक और घृणास्पद शब्द लिखे हुए हैं जिनके बारे मे कुछ कहना अपनी गर्दन शर्म से झुका लेना है। आज यहां पर हिन्दू धर्म ग्रंथ (संशोधन) विधेयक प्रस्तुत करते हुए हिन्दू धर्म की सारी बातें यहां पर मैं रखूंगा और स्पष्ट करूंगा कि इस धर्म के जो ठेकेदार हैं उन मुल्लाओं को पार्लियामेंट के द्वारा चुनौती दी चाहिए और उन सारी किताबों को जब्त कर लेना चाहिए।

माननीय सभापति जी, मैं यह अपनी ओर मे पहला बिल सदन में लाया हूं। हमको नियम और कायदे मालूम नहीं थे। मेरी पूरी तरह मे तैयार नहीं है। इसलिए मेरा इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि जो भी रूल हो, उस रूल के मुताबिक हम जितनी बात आज कह सकते हैं, कहने के बाद में मुझे फिर वक्त दिया जाए, ताकि मैं अपनी पूरी बात को यहां पर कह सकूं। मुझे मालूम नहीं था कि इस बिल को प्रस्तुत करने के पहले कुछ बोलना भी पड़ेगा। कानून विभाग ने बताया कि मुझे कुछ बोलना है।

17 hrs.

सभापति महोदय : जब बिल बनाकर मंजते हैं, तो तैयार रहना चाहिए।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : तैयार हूं, लेकिन जिस बखूबी के साथ बात कहनी चाहिए, वह शायद मैं न रख सकूं। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि यदि कानून के अंदर मुझे दोबारा कहने का चांस मिल सकता है, तो दिया जाए।

सभापति महोदय : दोबारा चांस नहीं मिलेगा। राइट आफ रिप्लाई आप के पास है।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मै जो स्वरूप पेश करना चाहता हूं, वह शायद न कर पाऊंगा। यह चर्चा एक घण्टे और चलेगी।

सभापति महोदय : दो घण्टे एलाट किए गए हैं।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : हिन्दू धर्म में कुछ पुस्तकें है, जैसे मनुस्मृति आपस्तम्भ ग्रन्थ, ब्राह्मण ग्रन्थ और कौटिल्य शास्त्र हैं तथा ऐसे-ऐसे ऋग्वेद हैं व बहुत सी किताबें है, जिनमे बहुत ही घृणात्मक बात कही गई है। जिस क्लास को अनुसूचित जाति कह कर, पिछड़ा वर्ग कह कर, उपेक्षित क्लास कह कर आज सम्बोधित किया जाता है और हिन्दू धर्म ग्रन्थ के अन्दर उस क्लास के बारे में अपमानजनक शब्द लिखे जाते हैं, जिस पर धार्मिक फतवा लिया जाता है कि यह हिन्दुस्तान उन्हीं लोगों का था। सिन्धु घाटी की सभ्यता को भी देखा जाए तथा आमली, नाल औंगड़, झांगड़ इन खुदाइयों के अवशेषों

को देखा जाए, तो यह प्रतीत होता है कि यह हिन्दुस्तान उनका ही था। उनको धार्मिक पुस्तकों में अनार्य कह कर इनकी काफी निन्दा की गई है।

मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूं। हिन्द धर्म की एक किताब मैत्रियानी संहिता है। इसमें करीब डेढ़ सौ श्लोक ऐसे लिखे हुए हैं, जो साफ तौर से आज के संविधान का उल्लंघन करते हैं। उस पर ठेस पहुंचाते हैं। भारतीय संविधान के साथ ही साथ हिन्दुओं के अन्दर जो 17-18 करोड़ अनुसूचित जातियां, जिनको दलित कहा जाता है, उनका माखोल उडाते हैं। मैत्रियानी संहिता में लिखा हुआ है कि अग्निहोत्र के काम में जिस गाय का दूध प्रयोग किया जाता है, शुद्र उस गाय को न दोहे। इसका मतलब यह है कि हिन्दू धर्म की पूजा में एक गाय होती है और जिस गाय का दूध उस पूजा में प्रयोग किया जाता है, शुद्र उस गाय को न दोहे और न उसको छूयें। इसके साथ ही साथ उसी किताब में यह श्लोक है कि शुद्र की उपस्थिति में यह यज्ञ नहीं करना चाहिए। जबकि ऋग्वेद में चार वर्ण बनाए गए हैं—ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य तथा शूद्र—यानी हिन्दू धर्म की चार ब्रान्चेज होगी। लेकिन उसी की एक ब्रान्च के भाइयों के लिए लिखा है कि उसकी उपस्थिति में यज्ञ नहीं करना चाहिए।

हिन्दू धर्म की ही एक पुस्तक शतपथ ब्राह्मण के एक मन्त्र के अनुसार शूद्र को सोमरस नहीं पिलाना चाहिए। हिन्दू धर्म के अनुसार बगैर सोमरस के पिये कोई भी हिन्दू यदि वह मोक्ष प्राप्त करना चाहता है तो प्राप्त नही कर सकता। सोमरस का पीना बहुत जरूरी चीज है। लेकिन अपने ही भाई के लिए शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि शूद्र से बात नही करनी चाहिए। "पंचविश ब्राह्मण" एवं "एतरेय ब्राह्मण' के अनुसार शूद्र को कोई अधिकार नही है, वह दूसरों का सेवक है। यदि कोई शूद्र पैदा हुआ है तो उसका कर्त्तव्य अपने से ऊपर की जातियां—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की सेवा करना है। आपस्तंभ धर्म शास्त्र के अनुसार शूद्र तथा पतित शमशान की तरह हैं। आप जानते हैं शमशान मुर्दा-स्थल को कहते हैं, जहां मुर्दे का दाह-संस्कार किया जाता है और धर्म के अनुसार वह बहुत ही खराब स्थान माना जाता है। लेकिन इस धर्म पुस्तक में बहुत स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि शूद्र शमशान के समान है। जिस मकान में शूद्र रहता है वहां वेद न पढ़ें···

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती रामदुलारी सिन्हा) : आप क्या कह रहे हैं ?

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : माननीया गृह मंत्री जी, यह सच्चाई है, आप इन ग्रन्थों को मंगा कर पढ़िये।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा : मैं इन सब बातों को नहीं मानती।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैं जानता हूं आप इन बातों को नहीं मानती, लेकिन आपका पूरा देश मान रहा है।

आपस्तम्भ धर्म सूत्र के मुताबिक यदि कोई शूद्र वेद सुन ले तो उसे पटक कर उसके कान में तत्काल खौलता हुआ रांगा डाल देना चाहिए। शूद्र यदि वेद मंत्र का उच्चारण कर लेता है तो तुरन्त उसे पटक कर उसकी जीभ काट लेनी चाहिए। इसी किताब में यह भी लिखा है कि यदि शूद्र स्त्री किसी वेद पाठी को देख ले तो उसे सर्वदा के लिए वेदपाठ बन्द कर देना चाहिए—इतना शूद्र स्त्री को अपवित्र माना गया है। क्षत्रीय हत्या का प्रायश्चित है—हजार गाय, लेकिन शूद्र हत्या का प्रायश्चित है—मात्र दस गाय। शूद्र स्त्री के साथ व्यभिचार का दण्ड केवल ग्राम निकाला है, लेकिन ब्राह्मण या द्विज स्त्री के साथ व्यभिचार का दंड प्राण दंड है। यदि कोई शूद्र किसी ब्राह्मण स्त्री के साथ व्यभिचार करता

है तो उसको तत्काल फांसी पर चढ़ाया जाना चाहिए, लेकिन ब्राह्मण के लिए दंड केवल मात्र ग्राम निकाला है।

वशिष्ठ धर्म शास्त्र हिन्दू धर्म का एक बहुत बड़ा ग्रंथ है। उसमें लिखा है—कृपण, शिकारी, बढई, धोबी, जासूस, सूदखोर, मोची और शूद्र का दिया भोजन न खावें। और शूद्र की उपस्थिति मे वेद न पढें। शूद्र के लक्षण बताते हुए इन धर्म-ग्रंथों में लिखा हुआ है कि शूद्र की परिभाषा क्या होगी। शूद्र की परिभाषा करते हुए लिखा है कि असत्य बोलने वाला शूद्र है, ब्राह्मण की निन्दा करने वाला शूद्र है, चुगली करने वाला शूद्र है व निर्दयी आचरण करने वाला शूद्र है।

'विष्णु स्मृति' मे लिखा हुआ है—यदि शूद्र ऊंचे आसन पर बैठ जाए तो उसके चूतड दाग कर देश से निकाल दिया जाए। यदि हम शूद्र हैं तो हम इस स्थान पर नही बैठ सकते है।

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : सभापति जी, यह गडे मुर्दे उखाड़ते है।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : यह हर रोज पढ़ाया जाता है। डागा साहब, यही कारण है कि रोजाना कत्ल हो रहे है, बेलछी जैसे काड हो रहे हैं। आप चुप है।

(व्यवधान)

डागा साहब, मै आपकी बात नही करता, इन धर्मग्रंथों की बात कर रहा हू। यह ठीक है कि आप खुद उनके साथ खाते-पीते है लेकिन और लोग क्या कर रहे है जिनकी सख्या करोड़ों मे है।

इसी 'विष्णु स्मृति' मे यह भी लिखा है कि अगर शूद्र ब्राह्मण को शिक्षा हेतु बतावे तो उसके मुख में गर्म तेल भरवा दें। इसमें यह भी लिखा है कि नाम किस प्रकार से रखे जाने चाहिए। एक परिभाषा के अनुसार तो कायस्थ भी शूद्र होता है। अगर ऐसा है तो हमारी गृह मंत्री जी भी शूद्र हैं।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : वह कायस्थ कहां है वह तो राजपूत हैं।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा : मैं तो सबसे पहले एक इन्सान हूं।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : लेकिन आपका ब्राह्मण समाज क्या कहता है। अगर उसकी बात मानी जाए तो एक शूद्र की जिह्वा काटी जा सकती है।

मान्यवर, इतना ही नही, एक किताब है 'मनुस्मृति'। इसका जिक्र अभी आएगा। लेकिन 'मनुस्मृति' से पहले मै "आपस्तम्भ सूत्र" का जिक्र करना चाहूंगा। इसमें बडी हास्यास्पद बात लिखी हुई है। इसमे लिखा है जिसको कहना मुझे शोभा नही देता कि जैसे कुत्ता, वैसे ही शूद्र है। फिर 'विष्णुस्मृति' मे यह भी लिखा है कि हमे जातियो मे नाम कैसे रखने चाहिए। इसमें लिखा है कि ब्राह्मण का नाम मगलकारी शब्दो मे होना चाहिए अर्थात् वृहस्पति, पांडे, क्षत्री का नाम बलशाली शब्दो मे होना चाहिए, जैसे वीरबहादुर सिह और तेजबहादुर सिंह, वैश्य का नाम धनपूजक शब्दो मे रखा जाना चाहिए, जैसे लक्ष्मीनारायण, करोडीमल और शूद्र का नाम रखा जाना चाहिए निन्दाकारी शब्दो मे जैसे बछुआ आदि। इस प्रकार से नाम रखने की बात भी हमारे धर्मग्रन्थो मे लिखी हुई है।

मान्यवर, 'गौतम धर्म सूत्र' जो कि एक बहुत बडी किताब है, उसमे लिखा है कि वेद सुनने पर शूद्र के कान में पिघला सीसा और लाख भरवाना चाहिए, वेदो के शब्द उच्चारण पर जिहवा काट लेनी चाहिए।

'मनुस्मृति' आज भी हिन्दु धर्म की एक नीति

विषयक ग्रंथ माना जाता है और इसको आज भी 80 परसेन्ट हिन्दु मानते हैं और जिस पर आचरण करते हैं। अभी हमारे साथी कह रहे थे कि हम नहीं मानते, लेकिन हिन्दुस्तान की 30-35 करोड़ जनसंख्या इसको मानती है। इस किताब में लिखा हुआ है कि शूद्र को सलाह, हवन का घी, धर्म शिक्षा न दें और शिक्षा देने वाला व्यक्ति असंबृत नामक नर्क में गिरता है।

> "ब्राह्मण शूद्र की सम्पति निःसंकोच ले ले, शूद्र किसी सम्पत्ति का मालिक नही होता। शूद्र का एकमात्र धर्म है अपने से ऊंचे वर्णों की सेवा करना। शूद्र न्याय न करे वरना देश में अकाल पड़ेगा। शूद्र का निन्दाजनित नाम रखा जाए। शूद्र के राज्य में निवास न करें और इतना ही नही आगे लिखा हुआ है कि एक तेली 10 कसाइयों के बराबर है। एक कलवार 10 तेलियों के बराबर है। एक वहरूपिया या वेश्या का एक नौकर 10 कलवारो के बराबर होता है। लोहार, मल्लाह, सोनार का अन्न वंश को खा जाता है।"

हमको बड़ा अजीब सा लग रहा है इन धर्मग्रंथों का उल्लेख करते हुए। आज आजादी के इतने साल बाद भी खुलेआम ये संविधान का उल्लंघन कर रहे है और इसको खुलेआम बिक्री की जा रही है। हमारे कुछ मित्र लोग कह रहे हैं कि हम लोग उनको नही मानते या उन ग्रंथों को पढ़ाता कौन है। मैं एक शब्द पूछना चाहता हूं कि अभी हाल में ही जब यहां से सम्पूर्णानन्द की मूर्ति का अनावरण हो रहा था बनारस में और बाबू जगजीवन राम जी जो उस समय रक्षा मंत्री थे भारत सरकार में, उनको वहां पर बुलाया गया था और जब माननीय सम्पूर्णानन्द की मूर्ति का अनावरण किया तो वहां पर नारा लगाया गया था संस्कृत यूनिवर्सिटी में "पालिश कौन करेगा—चमार करेगा" "दिल्ली से चमरा लाए संदेश—भैंस चरावे रामनरेश" इस किस्म के नारे लगाए गए। आज मेरे मित्र कहते हैं (व्यवधान)

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा: मैं आप से अर्ज करना चाहती हूं कि जिन बातों का उल्लेख आप कर रहे हैं वह किस समय की घटना है। यह उस समय की घटना है जब आपकी सरकार थी। इसके लिए उसी समय कुछ होना चाहिए था। उसके लिए हम लोग जिम्मेदार नहीं हैं।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री: हमको ऐसा लगता है कि बहुत पीड़ा है आपको और इस पीड़ा से हमको लाभ होगा। हमको बात कहने दीजिए। हम आपसे यह चाहेंगे कि आप अपने अधिकार का पूरा उपयोग करे और तत्काल इन धर्मग्रन्थों को जप्त करा दें। आज मैं जिन बातों का उल्लेख कर रहा हूं 20 वर्ष के बाद कोई और आदमी इस हाउस में इन बातों का उल्लेख न कर सके, इस तरह की व्यवस्था कीजिए। इसके लिए सारा राष्ट्र आपको बधाई देगा। मान्यवर जब बाबू जगजीवनराम वहां गए, उस समय इस किस्म का व्यवहार उनके साथ किया गया और बाबू जगजीवनराम वहां से चले आए तो उनके आने के बाद मेरी आंखों के सामने वहां के एक बहुत बड़े ब्राह्मण पंडित ने जो ऐसे ही मीठा बोला करता था और यह कहा करता था कि अब तो ये पुराने धर्मग्रन्थ हैं, अब मनुस्मृति का क्या महत्व है। उस आदमी ने गंगाजल मंगाया और गंगाजल मंगाकर खुलेआम उस मूर्ति को धोया और वहां लाठी चार्ज हुआ। इसके बाद जब मैंने इस अनटचेबिलिटी के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर किया तो मेरे नाम पर वाराणसी के अन्दर तमाम गुमकाम पत्र आने लगे कि आपने मुकदमा दायर किया है, हम यह कर देंगे-वह कर देंगे। आज मुझे इस बात का उल्लेख करते

हुए अफसोस होता है। कैसे इस हाउस मे बैठे हुए लोग कहते है कि गडे मुर्दे हम उखाड रहे हैं।

मान्यवर आपको एक घटना बता दू। एक व्यक्ति था, वह जाति का तेली था मोवासाव। माननीय गृह मत्री जी यहा बैठी हुई हे वे इस घटना की जाच कराए और इसका आश्वासन दे तो मै अभी इस बिल को वापिस लेने के लिए तैयार हू। अगर वे ऐसे दोशी लोगा को सजा देने के लिए तैयार हो। वाराणसी म तेली जो हे तेली है और हिन्दू धर्म मे नीच है, शूद्र है। मै किसी राजनीतिक दल के व्यक्ति का नाम लेकर विवाद मे नही पडना चाहता। वे लोग वहा गए और उन्होने कहा "निकल तेलिए"। यह 23 जनवरी की घटना है। उसके बाहर निकलने के बाद उसकी लडकी की शादी का जो 12 हजार रुपया वहा रखा हुआ था, उसमे से दस हजार उन्होने छीन लिया। वहा का दारोगा ब्राह्मण था। वह सामने बैठकर उन रुपमो मे स हिस्सा ले रहा था। उसने कहा कि आज हम बहुत खुश है क्योकि तुम शूद्र का रुपया लूटकर लाए हो। यह वाराणसी की स्थिति है। आज कहा जाता है कि गढे मुर्दो को न उखाडा जाए। मै आपको बताना चाहता हू कि वाराणसी मे जितने घाट है, वहा ब्राह्मणवादी व्यवस्था का पुजारी आज धर्म का ठेकेदार बना हुआ है और शूद्र महिलाओ के साथ किस तरह का व्यवहार करता है ? यह वहा की स्थिति है। गृह मत्री जी यहा बैठी हुई हैं। क्या वे वहा जाकर देखेगी ? आज गावो मे कहा जाता है कि तुम क्यो मुसलमान बन रहे हो ? क्यो ईसाई धर्म ग्रहण कर रहे हो ? क्या गृह मत्री जी की जिम्मेदारी नही है कि वे पता करें कि एक विशेष धर्म का व्यक्ति क्यो इतनी तेजी के साथ मुसलमान बन रहा है ? क्या किसी ने यह जानने की कोशिश की कि वह व्यक्ति किस पीड़ा के आधार पर मुसलमान बन रहा है ? मैं स्पष्ट रूप से बताना चाहता हू कि सविधान का खुले-आम उल्लंघन करने वाली जो बातें हिन्दू धर्म मे लिखी हुई है, उन्ही के आधार पर यह सब कुछ हो रहा है। बेलछी, कानपुर का या कोई भी काण्ड हो इन सब काण्डो के अन्दर धर्म की भावनाए ही घूणित की गई हैं। मनु-स्मृति जो धार्मिक ग्रथ है, उसमे लिखा हुआ है कि शूद्रो को मारने मे इतना ही पाप लगता है जितना कि बिल्ली, मेढक, कौवा, चिडिया या उल्लू को मारने मे लगता है। बडे अफसोस के साथ कह रहा हू कि शूद्र की जिन्दगी हिन्दू-धर्म के मुताबिक उल्लू, कौव और बिल्ली के समान है। ···(**व्यवधान**) मै सही कह रहा हू इसीलिए मत्री जी को बुरा लग रहा है।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा आप अपोजिशन के आनरेबल सदस्य है इसलिए गाली मत दीजिए।···(**व्यवधान**)

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री. मै गाली कहा दे रहा हू ? मैं तो आपकी कद्र कर रहा हू। आपको चुपचाप बैठकर सुनना चाहिए।··· (**व्यवधान**)

सभापति महोदय आपने 35 मिनट ले लिए है। जल्दी खत्म कीजिए।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : दस मिनट तो झगडे मे ही खत्म हो गए ; ···(**व्यवधान**)

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : इनके कहने का मतलब है कि मत्री जी चुपचाप कान खोलकर सुनती रहे।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मनु स्मृति मे लिखा है कि मजदूरी के बदले शूद्र को जूठा अन्न देवें और वह भी कैसे देवे कि जो शूद्र उसके यहा काम करता है तो बचा हुआ अन्न, जूठा अन्न जमीन पर रख कर दें। धर्म ग्रन्थो मे यह भी लिखा हुआ है कि जमीन पर पत्तल रख कर न दें बल्कि गिरा कर दें। शूद्र गले मे

हड़िया, कमर में झाड़ू बांध कर सड़क पर चले, भी लिखा हुआ है। झाड़ू बांध कर इसलिए कि उसके पांव के निशान जो जमीन पर पड़ते हैं और स्थान पर दूसरे के पांव के निशान पड़ जाते हैं तो जो सवर्ण है उसके पांव अपवित्र हो जाएंगे। इसलिए शूद्र जब चले तो झाड़ू बांध कर चले ताकि पीछे उसके निशान मिटते जाएं। हड़िया लटकाकर इसलिए कि यदि वह थूके तो उसमें थूके और यदि जमीन पर थूक देता है तो धरती मां अपवित्र हो जाएगी। जब चले तो हाथ डंडा लेकर और बजाता चले ताकि ब्राह्मण शोर सुने तो रास्ता खाली कर दे क्योंकि उसकी छाया उस पर अगर पड़ जाएगी तो गड़बड़ हो जाएगी। शूद्र जब बोले तो उस में भी कैटेगरीज निर्धारित की गई हैं। यदि बढ़ई बोलता है तो 30 हाथ की दूरी से बोले क्योंकि उसके मुंह की भाप वहां तक ही पहुंचती है, यदि तेली बोले तो 25 हाथ की दूरी से, यदि चमार बोले तो 40 हाथ की दूरी से और यदि भंगी बोले तो 101 हाथ की दूरी से।

श्री सुन्दर सिंह (फिल्लोर) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। आज मेरे घर में ब्राह्मण रोटी खाते हैं। कई जगह पंजाब में शादियां हो रही हैं। क्या बात कर रहे हैं।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : अगर मैं बोलता जाऊं तो तीन दिन लग जाएंगे। इनको बुरा लग रहा है, इसलिए मै खत्म कर रहा हूं।

रामायण में लिखा हुआ है ज्ञान गुणहीन ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिए और ज्ञान में प्रवीण शूद्र की पूजा नहीं करनी चाहिए। उसमें यह भी लिखा हुआ है, ढोर, गंवार शूद्र पशु नारि, ये सब ताड़न के अधिकारी।

इस तरह के वाक्य बहुत से हिन्दु धर्म ग्रन्थों में उनके प्रति लिखे हुए हैं जिनकी जनसंख्या आज चालीस पचास करोड़ है ये बहुत घृणित वाक्य हैं। मेरा कहना है कि इन धर्म-ग्रन्थों का पूर्णत: आप आदर करें लेकिन इस तरह की जो बातें लिखी हुई हैं उनको आप हटाएं। बहुत बड़ी संख्या में लोग इन ग्रन्थों को आदार और सम्मान देते हैं। लेकिन ये जो उनमें लिखी हुई हैं ये बहुत बड़ी क्लास के मन को चोट पहुंचाती हैं, उनका अपमान करती हैं, उनके प्रति घृणा और नफरत की भावना पैदा करती हैं। इसकी वजह से समाज में एक बहुत बड़ी विषमता उत्पन्न हो गई है। बहुत बड़ी क्लास इस व्यवस्था को मानता है। सारी हिन्दु जाति से मेरा मतलब नहीं है। बहुत से ब्राह्मण ऐसे हैं और उनकी संख्या बहुत ज्यादा है जो आज शैड्यूल्ड कास्ट्स से प्यार करते हैं। लेकिन एक बहुत बड़े क्लास के प्रति घृणा व्यक्त करता है और आज भी इनके साथ अपमानजक व्यवहार करता है। आज छूआछूत की भावना व्यावहारिक रूप से नहीं है, लेकिन मानसिक रूप से है। माननीय डागा जी कहते हैं हम तो सब के साथ खाते हैं, और गृह मंत्राणी जी कह रही थीं कि हमारे जीवन में ऐसा नहीं होता है। यह ठीक है। लेकिन आज स्थिति दूसरी हो गई है। आज दिमाग में छूतपन भर गया है और लोग देखते हैं, सोचते हैं कि हमारी जाति, बिरादरी का है कि नहीं, रिश्तेदार है कि नहीं। यह भावना आज आ गई है।

उत्तर प्रदेश, बिहार और देश के कोने-कोने में जो अत्याचार हो रहे हैं, जो एक क्लास पूरी तरह से दबाई जा रही है, कुचली जा रही है यह सब धर्म ग्रंथों की गन्दी मानसिकता की देन हैं। आज भी विद्यापीठ में मनुस्मृति एम०ए० के बच्चे को पढ़ायी जाती है और उससे वह प्रभावित होता है। आज चाहे छात्र संघ का चुनाव हो चाहे कोई और चुनाव हो, उनकी यदि समीक्षा की जाय तो उसमें इस किस्म की बातें वर्तमान होती हैं। इसलिए मेरे बिल का केवल यही मक्सद है कि जो इस ढंग की बातें हैं यदि इनको

इन धर्म ग्रंथों से निकाल दिया जाय तो इनकी शोभा और बढ़ जाएगी और उनकी महिमा भी नहीं घटेगी। हजारों सालों से यह धर्म ग्रन्थ चल रहे हैं, जब तक हिन्दू समाज रहेगा तब तक चलते रहेंगे। उनमें यदि में ऐसे शब्द, श्लोक और कंडिकाओं को निकाल दिया जाय तो उनकी महिमा बढ़ेगी, मर्यादा बढ़ेगी और जो समाज का उपेक्षित वर्ग है उसको भी पता चलेगा कि हम भी देश के नागरिक हैं, हमारे लिए भी आदर और सम्मान है और संविधान कभी उल्लंघन नहीं होगा जिसमें सामानता की बात कही गई है वह बात भी मर्यादित रूप से रहेगी।

यह हिन्दू धर्म में ही नहीं है, बल्कि और भी जितने धर्म हैं जिनमें इस प्रकार की बातें हैं उन सबमें से ऐसी बातें निकाल दी जाएं। जितने भी देश के अन्दर धर्म हैं, उनकी जो धार्मिक पुस्तकें हैं उनको देखा जाय और इसके लिए एक कमीशन बनाया जाए जिसका जिक्र मैंने अपने बिल में किया है, सभी धर्मों में से इस तरह की गन्दी बातें हटाकर एक मानव धर्म कायम किया जाए। मैं उन धर्मों को कम करने की बात नहीं करता, न ग्रन्थों के अपमान की बात करता हूं। मैं चाहता हूं कि वह ग्रंथ कायम रहें, उनकी मर्यादा बढ़े और लोगों में मानसिक रूप से एक दूसरे के प्रति समानता का भाव जागृत हो। यहीमेरा कहना है।

MR. CHAIRMAN : Motion moved :

"That the Bill to provide for a review of Hindu scriptures and other religious literature and for that purpose establish a Commission and for matters connected therewith. with a view to identify and omit or amend such words, sentences, paragraphs, stanzas, chapters, etc., from the scriptures and other religious literature which tend to encourage or propagate hatred, discrimination, inequality or untouchability among citizens on grounds of religion, race, caste, sex, vocation or place of birth, in violation of the principles enshrined in the Constitution. of India and the solemn resolution of the people of India contained in the Preamble to Constitution, be taken into consideration."

Mr. Mool Chand Daga. Are you moving your amendment ?

MR. MOOL CHAND DAGA (Pali) : *Yes, Sir. I beg to move :*

"That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by 31st July, 1984."

MR. CHAIRMAN : You can also speak on the Bill.

श्री मूल चन्द डागा : सभापति जी, हरि को भजे सो हरि का होई, जाति-पांति पूछे नहीं कोई, यह संत कबीरदास ने कहा और श्री राम ने तो शबरी के झूठे बेर तक खाए। अगर कोई बात को यहां ढंग से सोचे, इतिहास में जो कुछ बातें हुई हैं, दो तरीके हैं। महात्मा गांधी केवल स्वराज ही नहीं चाहते थे···वह सुराज्य चाहते थे। उनका उद्देश्य केवल आजादी लेना नहीं था, बल्कि वह चाहते थे कि हिन्दुस्तान में जो भी अछूत जाति के लोग हैं, हरिजन हैं, उनको गरिमा पूर्वक जीने का अधिकार हो।

डा० अम्बेडकर ने इसको चुनौती दी थी। महात्मा गांधी ने कहा था कि हम अपने कामों के लिए प्रायश्चित करते हैं और उन्होंने हिन्दू भाइयों को बतलाया कि आपको अपने कामों के लिए प्रायश्चित करना होगा। प्रायश्चित की भावना यह थी कि हम लोग यह चाहते थे कि हमने जो पाप किए हैं, अपराध किए हैं, उन पर हम प्रायश्चित करें और अपराधों को आगे न बढ़ने दें। इसीलिए संविधान के अनुच्छेद 17 में कहा गया है कि अन-टचेबिलिटी को एबोलिश कर दिया गया।

इतिहास आगे बढ़ता है, मनुष्य आगे बढ़ गया है, दरी कम हो गई है, विज्ञान

बढ़ना है और विज्ञान बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य मनुष्य के नजदीक आ गया है। अगर इतिहास के पन्नों में कुछ ऐसी बातें लिखी हों तो उस तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। उस समय के ग्रन्थ में अगर यह लिखा है कि "ढोल गंवार पशु शूद्र और नारी" तो इसका यह मतलब नहीं कि सारी रामायण को जला दो। कोई जोश में आ जाते हैं तो यह कह देते हैं, लेकिन आज अछूत भाई भी हिन्दू धर्म के अविभाज्य अंग हैं। लेकिन उन्होंने कह दिया कि जला दो, तो ऐसा कहने से क्या फायदा ? गीता में यह भी कहा गया है कि—**'बसुदेव कुटुमबकम्'**। सारे विश्व में जितने प्राणी हैं, वह ब्रह्मांड के अंश हैं। रविदास को आज हम श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते हैं। रसखान एक मुस्लिम कवि हुए हैं। उन्होंने कृष्ण के गीत गाए हैं और लीला का बहुत अच्छा बखान किया है। मुहम्मद जायसी ने हिन्दू धर्म के बारे में कभी ऐसी भावना से बात नहीं कही। उनकी भावना थी कि हम एक-दूसरे के साथ समता का भाव रखें।

अब अगर कुछ बातें कहीं मनु-स्मृति में लिखी हुई हैं, जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा है, कभी अखबार वाले उन्हें उछालते हैं, तो कभी-कभी उन बातों को दरगुजर कर देना चाहिए। श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री एक विद्वान मेम्बर आफ पार्लियामेंट हैं, वह हिन्दी संस्कृत के विद्वान हैं और उनके प्रति मेरी श्रद्धा है, वह अगर इन बातों को न कहें और हमारे ग्रन्थों में जो अच्छी बातें हैं, उनका संकलन करें, तो बहुत अच्छा हो। अगर किसी साहित्य में कुछ ऐसी बातें लिखी हैं, गन्दी बातें हैं तो कुछ साहित्य घासलेट-साहित्य भी होता है उसमें ऐसी बातें लिखी होती हैं, वह उसकी तरफ ध्यान न दें। अगर वह अच्छी बातों की तरफ ध्यान देंगे तो देखेंगे कि मनुष्य ने आज कितनी तरक्की की है। आज सोचने का तरीका मनोवैज्ञानिक हो गया है। इससे आज कितना सुधार हो गया है। आज हम आदमी-आदमी में आर्थिक दृष्टि से या किसी भी दूसरी दृष्टि से भेद नहीं करना चाहते, अगर कोई भेद है तो हम उसे मिटाना चाहते हैं।

महात्मा गांधी ने आजादी लेने के साथ-साथ रचनात्मक काम यह किया कि हमारी सच्ची आजादी तभी होगी जब कि भारत के एक-एक आदमी के बीच में अगर किसी प्रकार का भेद हो तो वह दूर हो। उसको मिटाना हमारा पहला कर्तव्य होगा। माननीय सदस्य आज एक ऐसा बिल लाए हैं, जो गड़े मुर्दे उखाड़ता है। आज उन बातों को याद करने की आवश्कता नहीं है। वह अपने हृदय की विशालता, गहरे अध्ययन और विद्वता को भूल कर, तुलसीदास जी एक पंक्ति को लेकर, रामायण जैसे ग्रन्थ की निन्दा करते हैं। डा० अम्बेडकर बड़े विद्वान थे। संविधान के निर्माण में उनकी जो भूमिका थी, उसके लिए सब उनका आभार मानते हैं। लेकिन हिन्दू-धर्म से निकल कर उन्होंने क्या बातें कहीं। हमें प्रत्येक धर्म को आदर और सम्मान से देखना चाहिए।

माननीय सदस्य ने जिन ग्रन्थों का जिक्र किया है, उनमें लिखी बातें कोई ब्रह्मवाक्य या वेद-वाक्य नहीं हैं कि उनको मान लिया जाए। उनको मानना हमारे लिए जरूरी नहीं है। आज 1984 में लोग बुद्धि और ज्ञान के आधार पर विचार करते हैं। उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है और वे भावनाओं में नहीं बहते। आज लोग एक शोषण-विहीन समाज चाहते हैं, जिसमें शोषण करना पाप समझा जाता है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि हिन्दुओं को अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए। उन्होंने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की, जिस में ज्यादा लोग वे थे, जिन्होंने प्रायश्चित करना था। हिन्दुस्तान की आजादी के अतिरिक्त उनका लक्ष्य यह था कि हमारे देश में भाई-भाई में भेद न रहे। इसके लिए उन्होंने आमरण अनशन किए ?

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : कब किए।

श्री मूल चन्द डागा : उनकी तारीखें तो इस वक्त मुझे याद नहीं हैं।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : उन्होंने 1932 में अनशन किया। उनको मरे कितने दिन हो गए? उसके बाद क्या स्थिति है?

श्री मूलचन्द डागा : संविधान के आर्टिकिल 17 के द्वारा अनटचेबिलिटी को एबोलिश कर दिया गया।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आज बहमई कांड और बेलछी कांड क्यों हो रहे हैं?

श्री मूलचन्द डागा : सारा सदन एकमत से उनको घृणा और नफरत से देखता है। कोई उनका समर्थन नहीं करता। हमारे लिए यह शर्म की बात है। उससे हमारी गर्दन शर्म से झुक जाती है। हम अपनी गलतियों के लिए प्रायश्चित करते है।

माननीय सदस्य एक कमीशन बिठाकर किस-किस ग्रन्थ की छान-बीन कराना चाहते हैं? कोई मलूकदास थे, जिन्होंने लिख दिया: "अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम, दास मलूका कह गए, सब के दाता राम।" क्या माननीय सदस्य उस बात को मानेंगे? एक आदमी ने जो कह दिया, क्या उसको मानना जरूरी है? इन बातों को इतिहास के पन्ने में रहने दें। श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री ऐसे विद्वान पैदा हुए हैं, जो उनको कनडेम करते हैं। समय इतना आगे आ गया है। जो इतिहास बन गया है उसमें जाने से कोई फायदा नहीं है। मनुष्य पहले जंगलों में नंगा रहता था, कच्चा मांस खाता था। क्या आप आज उस इतिहास की पुनरावृत्ति के लिए नंगे होकर आएंगे, दिगम्बर बन कर रहेंगे? सवाल क्या है? सवाल यह है कि आज के तरीकों से सोचना है। गृह मंत्री ने तो कुछ नहीं कहा। मैं प्रार्थना करूंगा आपसे कि आप जैसे विद्वान जिन्होंने इतनी खोज की, उसमें इन किताबों और ग्रन्थों को बीच में मत लाइए। वह किसी के भी पुस्तकालय में आज शोभा नहीं पाते हैं। आपके पास अटल बिहारी वाजपेयी जी बैठे हुए हैं, उनसे पूछ लीजिए। आप मेहरबानी करके उन ग्रन्थों को अपने पुस्तकालयों से भी हटा दीजिए।

हिन्दू धर्म के अविभाज्य अंग आप ही हैं। गलतियां हुई, हम मानते हैं और उसके लिए प्रायश्चित भी करते हैं, करते रहेंगे। लेकिन आप गड़े मुरदे को उखाड़ने की कोशिश करें, उससे क्या मतलब निकलेगा? गीता में तो यह कहा है कि कर्म से आदमी नीचा या ऊँचा होता है, कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य बनता है। हमारे यहां तो कर्म प्रधान रहा है, काम में हम विश्वास करते हैं। हम किसी काम को नीचा नहीं समझते। जो काम हरिजन करते हैं उसको ज्यादा महत्ता देते हैं। इसीलिए महात्मा गांधी ने स्वप्न देखा था कि जब हरिजन कन्या राष्ट्रपति के पद पर बैठेगी तो मैं गर्व अनुभव करूंगा। तो आज उन पुरानी बातों को लाकर इस तरह की बात क्यों करते हैं? मैं समझता हूं कि इन बातों की जो राजनाथ सोनकर शास्त्री जी ने आज खोज करनी शुरू की जब कि आज लोग आकाश में उड़ने लगे है, चांद पर जाने लगे हैं तो वह क्यों इतने गहरे में जाते हैं। ज्यादा गहरे में जाएंगे तो कीचड़ ही कीचड़ निकलेगा। उस कीचड़ से जो कमल निकल गया है उसकी सुगन्ध लीजिए। कीचड़ में मत फंसिये। पुराने ग्रन्थों को छोड़ दीजिए। किसी ने कुछ कह दिया, किसी ने कुछ कह दिया, उससे क्या मतलब है? कबीरदास जी को भी आप जानते हैं उन्होंने भी कितनी बातें कही हैं। कितने बड़े संत वह हुए हैं। इंसान-इंसान में भेद तो हम समझते नहीं हैं। हमारे दिमाग में तो यह आता है कि पूरा ब्रह्माण्ड में एक शक्ति है और सब उसी के अंश हैं। वसुदेव

कुटुम्बकम् की भावना हमारी है। कोई भेद हमारी दृष्टि में नहीं है। इस धरती पर आप ऐसी बात क्यों करते हैं जहां रामचन्द्र जी ने भीलनी के बेर खाए थे ? इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप ऐसे ग्रन्थों को अपनी लाइब्रेरी में से भी निकाल कर बाहर फेंकिए और उनमें मत जाइए।

श्री सुन्दर सिंह (फिल्लोर) : यह जो बिल है इसमें पुरानी बातों को जो आप लाए हैं, आप को यह सोचना चाहिए कि उससे क्या फायदा निकलेगा ? मैं आपको बताऊं, मैं भी तो अछूत हूं। महात्मा गांधी थे, डा० अम्बेडकर ने कहा था :

> "I was born as a Hindu. The blame was not mine. I will not die as a Hindu."

इतना वह हिन्दू धर्म के बरखिलाफ थे लेकिन फिर वह महात्मा गांधी को क्यों मानते थे ? जब उनको सीटें मिली तो उनकी सब बात मान गए। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था :

> "That without which we cannot live must come to us."

जिसके बगैर हम रह नहीं सकते वह हमें मिले बगैर नही रह सकता। वह जरूर मिलेगा। महात्मा गांधी हरिजनों के बगैर रह नहीं सकते थे, हरिजन उनके साथ रहे। डा० अम्बेडकर उनके बगैर नहीं रह सकते थे, इसलिए वह उनसे अलग रहे। मैं पूछता हूं डा० अम्बेडकर ने सेपरेट एलेक्टोरेट की बात क्यों छोड़ी ? वह समझे कि महात्मा गांधी हरिजनों के नजदीक हैं। वे समझते थे कि महात्मा गांधी उनके ज्यादा नजदीक है। क्यों नजदीक हैं, मैं आपको बता दूं।

I do not want to be re-born. But if I have to be re-born, I should be born as as 'Untouchable' so that I may share their sorrows and sufferings affronted upon them. I therefore pray that if I have to do so again, I should not do so as a Brahmin, Kshatriya, Vaisya or Sudhra, but, as an Ati-Sudhra.

यह उन्होंने कहा था। इसलिए वे महात्मा गांधी के नजदीक थे। (**व्यवधान**) अब आप एम० पी० बन गए, मैं भी एम० पी० बन गया और बूटा सिंह जी मिनिस्टर बन गए। गलतियां तो हर जगह होती हैं उनको दूर करना हम सभी का फर्ज है। आपने उनको असेम्बली का मेम्बर बना दिया। पहले तो वोट का भी हक नहीं था। जो एम० एल० ए० हैं वह गवर्नमेंट बना भी देते हैं और गवर्नमेन्ट को गिरा भी देते हैं। मैं पंजाब में मेम्बर भी रहा हूं और मिनिस्टर भी रहा हूं। वहां पर अगर निकम्मी गवर्नमेन्ट होती थी तो उसको हम बदल देते थे। पंजाब में जमीन नहीं मिलती थी, लैंड रिफार्म्स नहीं होते थे। हमने पं० जवाहर लाल नेहरू से मिलकर लैंड रिफार्म्स करवाए। हमने उससे कहा कि हमें मिनिस्ट्री नहीं चाहिए लेकिन जमीन जरूर चाहिए। सरदार प्रताप सिंह कैरों भी जमीन नहीं देता था लेकिन हमने लड़कर दो लाख एकड़ जमीन पंजाब और हरियाणा में ले ली। अब वहां पर हरिजन मार नहीं खाते हैं। आप पहाड़ पर और दूसरी जगहों पर मार क्यों खाते हैं ? आप वहां के अपने एम० एल० एज को क्यों नहीं ठीक करते हैं ? एम० एल० एज गवर्नमेन्ट को बना भी सकते हैं और गवर्नमेन्ट हटा भी सकते हैं। आप चाहें तो सब कुछ कर सकते हैं। जहां पर कोई मार खाता है वहां पर जो हरिजन एम० एल० ए० हैं उनको मुकाबला करना चाहिये और जो एम० पीज० हैं उनको भी मुकाबला करना चाहिए। हमारे यहां के गांवो में कोई भी लड़ाई करके देख ले, हम उनको मारेंगे। कारण यह है कि जिसके पास जमीन होती है उसके पास लाठी भी होती है। कहा जाता है कि चरण सिंह हरिजनों को वोट नहीं डालने देते। वह इसलिए

कि वहां उनके पास जमीन नहीं मिली है। अगर उनको जमीन मिली होती तो उनके पास लाठी भी होती। अगर अपने को बचाना है तो उसके लिए आपको भी लड़ाई करनी होगी।

जिन चीजों के बगैर हम रह नहीं सकते हैं वह तो जरूर मिलनी चाहिए। आपके इलाके में रोज लोग मारे जाते हैं। आप क्यों नहीं मुकाबलाकरते हैं? आप धर्म-ग्रंथों की बात करते हैं लेकिन आप मंदिरों में रोटी नहीं दे सकते और दो दिन किसी को रख नही सकते हैं। फिर सिखों को ही क्यों नहीं देते? आपको यह मालूम होना चाहिए कि हम कमजोर नही हैं, हम मैम्बर हैं, हमारे पास अकल भी है और हम हिन्दू भी है और और हिन्दू धर्म को हमें ठीक करना होगा। जो पुरानी बातें हैं उनका असर हमारे ऊपर नही पड़ेगा। आपने कहा कि डा० अम्बेडकर महात्मा गांधी को मानता था। वह इसलिए मानता था क्योंकि महात्मा गांधी हरिजनों के बहुत नजीदक था। कौन नहीं चाहता है कि गरीब आदमी जो आगे आए, लेकिन जब तक गरीब आदमी खुद कोशिश नहीं करेगा, चाहे सी० पी० एम० हो या सी० पी० आई० हो, कोई कुछ नही कर सकता है। पुरानी बातें करोगे तो छूआछूत शुरू हो जाएगी। पंजाब में जो हरिजन हैं, उसने गैर-जाति में शादियां की हैं। ब्राह्मण के साथ शादियां की हैं। यदि यह पंजाब में हो सकता है, तो और जगहों पर भी हो सकता है। खुद मे ताकत होनी चाहिए, तो सब कुछ हो सकता है। जो टट्टी साफ करता है वह सरकार में गलत अफसरों को भी साफ कर सकता है। हरिजन सबसे कम खाता है और थोड़ी जगह में रहता है। वह समाज को अधिक से अधिक देता है। इसीलिए वह भविष्य का नेता है। कहते हैं कि परमात्मा हमारी मदद करेगा, परमात्मा कौन है, मदद करनी है, तो खुद की मदद करो। अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए।—Who has faith has all, who lacks faith lacks all. It is the faith in the name of the Lord that works wonders. For the faith is life and doubt is death. हिन्दू-सिख कब्जे के लिए मर रहे है। पंजाब में कब्जे के लिए लड़ाई हो रही है। कोई खालिस्तान और कोई हिन्दू राज चाहता है। जो आदमी किसी चीज पर कब्जा जमाने की कोशिश करता है वह नीचे को जाएगा जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा है: "All expansion is life. All contraction is death. All life is expansion. All selfishness is contraction. Love is, therefore, the only law of life. He who loves lives; he who is selfish is dying, Therefore, love for love's sake, because it is the only law of life. Swami Vivekananda said this. जो आदमी कब्जा जमा रहे हैं, वे मर रहे हैं। कोई दुनिया की ताकत उनको नहीं रोक सकती है। कब्जा करना चाहते हैं कि यह सूबा है, यह हमारी चीज है, फिर हम वहां से आए हैं।

सभापति महोदय: क्या आप और समय लेना चाहते हैं?

श्री सुन्दर सिंह: मैं और समय लूंगा।

MR. CHAIRMAN: The hon. Member may please continue next time.

18 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, February 27, 1984/*Phalguna* 8, 1905 (*Saka*).

Printed at the Indian Press